ऋग्वैदिक काल के धर्म की प्रकृति

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

. ऋग्वैदिक काल की धार्मिक जीवन की प्रकृति निम्नलिखित है

- आर्यों ने प्रकृति का दैवीकरण किया. जैसे वर्षा, सूर्य तथा उसकी रश्मियां, पर्वत व नदियों को देवी देवता बनाना.

- धर्म का एक स्वरूप मानवाकृतिक भी था. आर्यों ने मानवीय गुणों का आरोपण करके देवी देवताओं को बनाया था.

- ऋग्वैदिक धर्म कर्म काण्ड प्रधान नहीं था. यज्ञ किये जाते थे लेकिन मुख्य जोर प्रार्थना, स्तुति वन्दना एवं प्रकृति पूजा पर था.

- धर्म का स्वरूप यथार्थवादी भी था. क्योंकि ऋग्वैदिक आर्य स्वर्ग में जाने के लिए पूजा नहीं करते थे बल्कि इसी जीवन में भौतिक उन्नति के लिए प्रार्थना करते थे.